Tender Heart High School, Sector-33-B, Chandigarh.

कक्षा - नौवीं विषय - हिन्दी व्याकरण
शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : सरस हिन्दी व्याकरण भाग-नौ,दस

उपविषय : 'लोकोक्ति पर आधारित कहानी'

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी व्याकरण की पाठ्य-पुस्तक सरस हिन्दी व्याकरण भाग नौ एवं दस की पृष्ठ-संख्या-88 पर दी लोकोक्ति पर आधारित कहानी लेखन पर चर्चा करेंगे।

कहानी-लेखन एक कला है। विद्यार्थी अभ्यास के द्वारा इसमें कौशल प्राप्त कर सकते हैं। आई. सी. एस. ई. द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अंतर्गत छात्रों से किसी लोकोक्ति, सूक्ति अथवा मुहावरे को देकर उस पर कहानी लिखने के लिए कहा जाता है। यह प्रश्न भी प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा समान रूप से सही ढंग से किया जाना चाहिए। इसे करते समय विद्यार्थियों को कहानी का एक रेखाचित्र मस्तिष्क में बना लेना चाहिए। तत्पश्चात् कथावस्तु, संवाद, पात्र तथा उनका चरित्र सूक्ष्म ढंग से करना चाहिए। कहानी किसी उद्देश्य को लेकर लिखी गई हो तथा अंत में प्रभाव छोड़ने वाली हो। कहानी के मुख्य तत्त्व निम्नलिखित हैं :-
(क) कथानक (ख) पात्र (ग) संवाद (घ) शैली।

कहानी में दिए गए विषय से संबंधित प्रमुख घटनाएँ ही कथानक हैं। घटना का संबंध जिन व्यक्तियों से होता है, वे पात्र कहलाते हैं। पात्रों की बातचीत संवाद होती है तथा कहानी लिखने का तरीका

ही शैली है।
कहानी लिखते हुए विद्यार्थियों को जिन बातों का ध्यान रखना चाहिए वे निम्नलिखित हैं :-
(क) दिए गए मुहावरे या लोकोक्ति को अथवा किसी भी संकेत को ध्यान से पढ़ना चाहिए। यह ध्यान रहे कि कहानी का मूल भाव मुहावरे - लोकोक्ति अथवा दिए गए संकेत में छिपा है।
(ख) कहानी में आवश्यक घटना को ही विस्तार दिया गया हो।
(ग) कहानी का आरंभ और अंत दोनों ही प्रभावोत्पादक होने चाहिए, तभी अच्छे अंक प्राप्त होंगे।
(घ) कहानी में संवाद छोटे हों एवं उनकी पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए।
(ङ) मुहावरे अथवा लोकोक्ति या दिए संकेत / उक्ति के मुख्य भाव को कहानी में ज़रूर स्थान दें।
(च) कहानी की भाषा सरल, स्वाभाविक तथा सजीव होनी चाहिए। अनावश्यक रूप से कठिन शब्दों का प्रयोग (जानबूझकर) करके प्रभाव डालने की कोशिश न करें।
(छ) मुख्य रूप से कहानी लिखने के लिए निरंतर अभ्यास की अत्यंत आवश्यकता है।

बच्चो! अब मैं आपको एक उक्ति पर आधारित कहानी को विस्तार से बताने जा रही हूँ। आप इसे ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे व समझेंगे।
निम्नलिखित उक्ति पर आधारित कहानी इस प्रकार है :-

★ "विनाशकाले विपरीत बुद्धि"

'विनाशकाले विपरीत बुद्धि' इस प्रसिद्ध उक्ति का अर्थ है कि जब भी कोई व्यक्ति किसी मुसीबत में फँस जाता है अर्थात् विनाश काल निकट होता है तो उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। इसी उक्ति पर आधारित मुझे एक कहानी याद आ रही है, जो इस प्रकार है :-

पुराने समय में अरब देश में एक व्यापारी रहता था। वह बहुत ही परिश्रमी था इसलिए वह एक धनी व्यापारी

बन गया था। सुलतान नाम का उसका एक पुत्र था। वह अपने पिता की संपत्ति का पूरा उपभोग कर रहा था। कुछ समय बाद उसके पिता जी का देहान्त हो गया। सुलतान अपने पिता की पूरी संपत्ति का मालिक बन गया। अनपढ़ होने के कारण वह अपने पिता की संपत्ति का सदुपयोग नहीं कर सका। वह घर बैठे-बैठे उस धन को खर्च करने लगा। कमाई के साधनों के अभाव तथा फिजूलखर्ची के कारण कुछ ही दिनों में वह गरीब हो गया। पिता की कमाई के सौ ऊँट ही उसके पास शेष रह गए।

अब सुलतान ने ऊँटों को बेचने की बात सोची। मित्रों ने बहुत समझाया कि जब तक तुम स्वयं नहीं कमाओगे तब तक आराम की ज़िंदगी नहीं जी सकते। लेकिन सुलतान पर इस सुझाव का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह ऊँट लेकर मेले में चल दिया। रास्ते में उसे एक साधु मिला जो उदार और परोपकारी था। साधु ने सुलतान के चेहरे से पहचान लिया कि वह अमीर बाप का बेटा है। साधु ने उससे ऊँटों के बारे में पूछा। सुलतान ने उन्हें बताया कि वह उन्हें बेचकर कुछ दिन आराम से रहेगा। साधु ने उससे कहा कि मैं तुम्हें पैसा कमाने की तरकीब बताता हूँ। इस तरकीब से जो भी पैसा कमाया जाएगा उसे हम दोनों आधा-आधा बाँट लेंगे। सुलतान ने साधु की बात मान ली तो साधु ने धन कमाने का भेद बताते हुए कहा - "वह देखो, सामने पहाड़ी है। उसके पास सोने की बहुत बड़ी खान है। चलो, वहाँ चलें और सोना ऊँट पर लादकर ले आएँ।" दोनों पहाड़ी के समीप पहुँचे। साधु ने ज़मीन खोदकर सोना निकाला और ऊँट पर लाद दिया। इस प्रकार ऊँटों पर सोना लादकर वे दोनों नगर की ओर चल दिए। रास्ते में दोनों ने पच्चास-पच्चास ऊँट आपस में बाँट लिए।

चलते-चलते सुलतान के मन में लालच आ गया। उसकी नीयत खराब हो गई और वह साधु से

बोला, "महाराज ! मैं गृहस्थ हूँ। आप बड़े दयालु और सोने - चाँदी से मोह न करने वाले हैं। आप इन सोने से लदे ऊँटों का क्या करेंगे ? यदि आप मुझे दस ऊँट और दे दें तो मेरा रोम - रोम आपको दुआएँ देगा।"

साधु ने सुल्तान की बात मान ली, किन्तु सुलतान का लालच समाप्त नहीं हुआ। वह कई बार साधु के पास गया और अनुनय - विनय (प्रार्थना) करके सभी ऊँट ले आया। अन्त में साधु ने सुल्तान को एक पुड़िया दी। यह पुड़िया उसे सोने के साथ ही मिली थी। साधु ने बताया कि इस पुड़िया में एक चीज़ है यदि उसका लेप तुम बायीं आँख पर करोगे तो तुम अपनी कोई भी इच्छा पूरी कर सकते हो और यदि इसका लेप दाईं आँख पर करोगे तो तुम अंधे हो जाओगे।

सुलतान ने अनेक बार, उस पुड़िया का बाईं आँख पर लेप करके अपनी मनोकामना पूरी की किन्तु जब मनुष्य का विनाश होने को होता है तो उसकी बुद्धि उल्टे काम करने लगती है। सुल्तान ने मन में सोचा कि मैं इसका लेप दाईं आँख में लगाकर देखूँ कि क्या प्रभाव पड़ता है।

जैसे ही उसने पुड़िया का लेप दाईं आँख में किया वह तुरंत अन्धा हो गया। उसके ऊँट भी उसके हाथ से निकल गए। दर - दर ठोकरें खाता हुआ वह अपने घर लौटा और दुःखी जीवन बिताने लगा।

किसी ने सच ही कहा है - "विनाशकाले विपरीत बुद्धि"।

★ गृहकार्य

सभी छात्र उपर्युक्त कहानी को ध्यानपूर्वक पढ़कर अपनी - अपनी व्याकरण की उत्तर - पुस्तिका में लिखेंगे। सभी छात्र आपकी पुस्तक की पृष्ठ संख्या 88 से 95 तक दी लोकोक्ति पर आधारित कहानियों को पढ़ेंगे, समझेंगे तथा इनके अर्थ जानकर इन पर आधारित कहानियों को अपने शब्दों में भी लिखने का प्रयास करेंगे।

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]